HISTORY: CLASS-6: SUMMARY

अध्याय 6- मौर्यों के बाद भारत

दक्कन

- दक्षिणापथ -ये विंध्य पर्वत और नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित क्षेत्र है
- दक्कन द्रविड़ों या तमिलों की भूमि है। प्राचीन काल से, ये भूमि गैर-आर्य भारतीय लोगों के घर थे।
- मौर्यों द्वारा अनुलग्न, शक्तिशाली साम्राज्य के पतन के बाद उन्हें बाद में मुक्त कर दिया गया था।

सातवाहन –

- आन्ध्र सातवाहन परिवार- ये दक्षिण भारत के सबसे प्रसिद्ध राजाओं में से एक थे|
- महान शासक- सतकर्णी जो एक विजेता थे और उन्हें "पश्चिम के भगवान" के रूप में वर्णित किया गया था।
- गौतमीपुत्र सातकर्णी- शकों ने उन पर हमला किया और उन्हें नासिक से आंध्र में पंहुचा दिया लेकिन उन्होंने शकों को हरा दिया और पश्चिमी दक्कन को वापस पा लिया।
- इस राज्य ने उत्तर भारत और दक्षिण भारत के बीच एक सेतु का काम किया।
- भरूच बंदरगाह का इस्तेमाल फारस, इराक और अरब से आने वाले जहाजों द्वारा किया जाता था।
- जहाज इन बंदरगाहों से बर्मा और मलाया की ओर रवाना हुए। सातवाहन साम्राज्य समृद्ध था। यह अच्छी तरह से प्रशासित किया गया था। राज्य को नागरिक और सैन्य राज्यपालों द्वारा शासित प्रांतों में विभाजित किया गया था। प्रत्येक गाँव का मुखिया राजस्व या कर वसूलने के लिए जिम्मेदार होता था।

बौद्ध स्मारक

- स्तूप बड़े अर्ध-वृत्ताकार टीले थे, जिनमें बुद्ध या बौद्ध भिक्षुओं के अवशेष रखे गए थे।
- अमरावती (आंध्र प्रदेश में) में स्तूप, और सांची स्तूप का रेलिंग और प्रवेश द्वार गोल व्यापारियों और राजकुमारों द्वारा दिए गए धन से बनाया गया था
- स्तूप के पास विहार, या मठ थे, जहाँ भिक्षु रहते
- तक्षशिला (पेशावर के निकट) और सारनाथ में कई बौद्ध मठों का निर्माण बड़े शहरों के समीप हुआ।

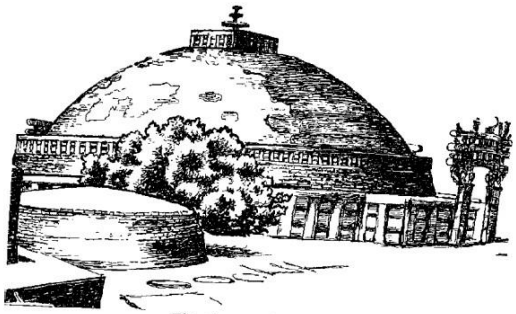

The stupa at Sanchi

- कुछ भिक्षु मठों में रहते थे जो विशाल गुफाओं (मूर्तियों से सुशोभित) पहाड़ियों से काटे गए थे,

जैसे कि कार्ले और बेड़सा (पूना के पास पश्चिमी घाट में)। इस समय की धार्मिक कला मुख्य रूप से जैन और बौद्ध मूर्तियों पर आधारित थी।

धर्म

- बौद्ध धर्म बहुत लोकप्रिय था- बहस और चर्चाएं आयोजित की गईं और भिक्षुओं को पढ़ाने के लिए बाहर भेजा गया। अश्वघोष और नागार्जुन ने अपने लेखन द्वारा बौद्ध धर्म के प्रसार में मदद की।
- अब नए देवताओं की पूजा की गई, विष्णु और शिव के की पूजा को समर्थन प्राप्त हुआ। धार्मिक अनुष्ठानों की तुलना में भगवान की भक्ति अधिक महत्वपूर्ण हो गई। यज्ञ, संस्कार आदि में कमी आई।

दक्षिण भारत

1. चोल, पांड्य और चेर

- दक्कन में सातवाहन राज्य के दक्षिण में, तीन राज्य विकसित हुए।
- ये चोल (जिनका केंद्र तंजौर के क्षेत्र में, मद्रास के दक्षिण में), पांड्य (जिसका केंद्र मट्टै में था), और चेर (या मालाबार तट के साथ केरल) थे।
- तंजौर के क्षेत्र को तमिलनाडु या तमिलों की भूमि कहा जाने लगा क्योंकि तमिल भाषा वहां बोली जाती थी।
- इन तीन दक्षिण भारतीय राज्यों का ज्ञान संगम साहित्य पर आधारित है।

संगम साहित्य

- इन तीन संगमों को मदुरै शहर में आयोजित किया गया था। दक्षिण के सभी कवि एक साथ एकत्र हुए और कविताओं की रचना की। लेकिन इस सभा में रची गई कविताएँ अब विलुप्त हो गई हैं। दूसरी सभा में, आठ किताबों में दो हज़ार कविताएँ एकत्र की गईं।
- ये कविताएँ वेदों के भजनों से मेल खाती हैं लेकिन ये सभी धार्मिक कविताएँ नहीं हैं। वे तमिल में लिखे गए हैं। इन कविताओं में प्रमुखों और आम लोगों के जीवन का वर्णन है।

रोमन व्यापार

- व्यापार की तलाश में मालाबार तट और तमिलनाडु के पूर्वी तट पर रोमन जहाजों द्वारा दौरा किया गया था। मसाले, वस्त्र, कीमती पत्थर, मोर, रोमन द्वारा ले लिए गए और उनके लिए सोने में भुगतान किया गया।
- अरीकेमेडु से (पांडिचेरी के करीब) खुदाई में कई रोमन वस्तुएं मिली हैं।

जीवन

- राज्य पर एक राजा का शासन था जिसे ब्राह्मण सलाहकारों द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी। सभी प्रमुखों की एक सामान्य सभा भी थी जिसे सभा के रूप में जाना जाता था जहाँ विभिन्न मामलों पर चर्चा की जाती थी।
- राजा ने किसानों, चरवाहों, कारीगरों और व्यापारियों से कर एकत्र किया। विभिन्न प्रकार के संगीत वाद्ययंत्र - पाइप, बांसुरी, स्ट्रिंग वाद्ययंत्र और ड्रम का प्रयोग होता था

धर्म

- मुरुगन, जिसे उत्तर में कार्तिकेय या स्कंद के नाम से जाना जाता है, तमिल लोगों के सबसे ज्यादा पसंद किया जाने वाले देवता थे।

उत्तर भारत

- उत्तर में, 100 ई.पू. के मध्य बड़ी संख्या में विदेशी आए। ये बैक्ट्रियन यूनानी, पार्थियन, शक और कुषाण थे। यूनानियों के अपवाद के साथ, अन्य सभी मध्य एशिया से आए थे।

1. इंडो-यूनानियों

- उन्होंने ईरान, अफगानिस्तान- पश्चिमी एशिया में शासन किया; इंडो यूनानियों ने गांधार प्रांत में भी शासन किया।
- उन्होंने कई सिक्कों का प्रचलन किया, और इस प्रकार, इस अवधि के इतिहास को एक साथ रखना संभव हुआ | उनमें से कुछ बौद्ध बन गए, जैसे मियांडर, अन्य ने विष्णु की उपासना की। इसलिए, इसे भारतीय और यूनानी संस्कृतियों का मिश्रण कहते हैं

2.शक

- वे अंततः काठियावाड़ और मालवा में बस गए। सबसे प्रसिद्ध राजा रुद्रदामन ने सातवाहनों का विस्तार रोक दिया

3. कुषाण

- मूल रूप से ये चीनी तुर्किस्तान से थे, ये पहली शताब्दी में अफगानिस्तान पहुंचे और भारत-यूनानियों को विस्थापित किया।

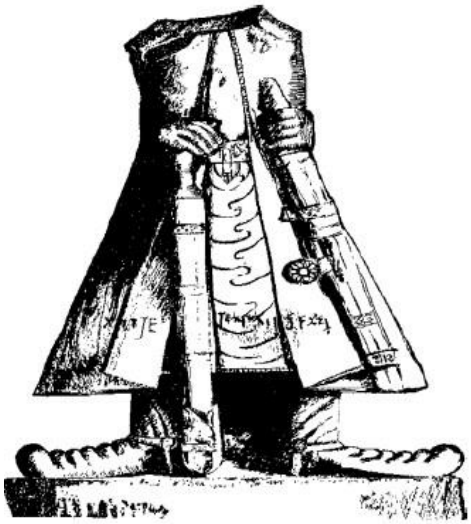

A broken statue of Kanishka found near Mathura

- फिर, उन्होंने तक्षशिला और पेशावर में स्वयं को स्थापित किया। मथुरा उनके राज्य के दक्षिणी भाग में एक महत्वपूर्ण केंद्र था।
- राज्य को राज्यपालों द्वारा शासित क्षत्रपों या प्रांतों में विभाजित किया गया था।

विचारों का आदान प्रदान

- धर्म पर कई नए विचारों के रूप में, कला और विज्ञान ने भारतीय जीवन के विभिन्न पहलुओं में प्रवेश किया, जिससे कई परिवर्तन हुए।
- भारत ईरान और पश्चिमी एशिया के निकट संपर्क में आया। व्यापार में वृद्धि हुई और भारतीय वस्तुएं भूमध्य सागर के शहरों और बंदरगाहों पर निर्यात होने लगी।
- अलेक्जेंड्रिया के बंदरगाह (मिस्र में नील नदी के मुहाने पर) के साथ भारतीय व्यापार में बड़ी दूरी के बावजूद सुधार हुआ।

कला

पश्चिमी एशिया के साथ संपर्क ने उत्तरी भारत के शहरों में ग्रीक मूर्तिकला को विकसित किया।

- ये ग्रीक और रोमन देवताओं और भूमध्यसागरीय लोगों की छवियां थीं।
- बुद्ध के जीवन से और अन्य दृश्यों की उनकी प्रतिमाएं ग्रीक शैली से मिलती-जुलती थीं, और इस तरह की कला को गांधार कला कहा जाता था।
- मथुरा में एक शैली का निर्माण हुआ जो ग्रीक की नकल नहीं करता था, हालांकि चित्र बौद्ध थे। इस कला को मथुरा स्कूल कहा ॥ जाता है।

Head of the Buddha, sculptured in the Gandhara style

6. धर्म

- बुद्ध, बोधिसत्वों की छवियां, जिनका बौद्ध सम्मान करते थे
- बोधिसत्व पवित्र व्यक्ति थे जो बुद्ध से पहले पृथ्वी पर रहते थे। जातक कथाओं में उनके बारे में कई कहानियाँ हैं। बौद्ध धर्म दो संप्रदायों में विभाजित हो गया- महायान और हीनयान।
- महायान कई संस्कारों और अनुष्ठानों वाला एक संप्रदाय था। इसके भिक्षु शक्तिशाली थे।